हज़रत रामचंद्र जी महाराज,
हज़रत कृष्ण जी महाराज और वेद

के सम्बंध में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
अलैहिस्सलाम के उपदेश

संकलन कर्ता
मुहम्मद हमीद कौसर
नाज़िर दावत ए इलल्लाह शुमाली हिंद (उत्तर भारत)

नाम पुस्तक	: हज़रत रामचंद्र जी महाराज, हज़रत कृष्ण जी महाराज और वेद के सम्बंध में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के उपदेश
संकलन कर्ता	: मुहम्मद हमीद कौसर नाज़िर दावत ए इलल्लाह शुमाली हिंद (उत्तर भारत)
अनुवादक	: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद (एम ए हिन्दी)
टाइप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अप्रैल 2019 ई०
संख्या	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Compiler	: Mohammad Hameed Kausar, Nazir Dawat-e-Ilallah North INDIA
Translator	: Syed Mohiuddin Farid (M.A. Hindi)
Type Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition	: 1st Edition (Hindi) April 2019
Quantity	: 1000
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला की ओर से मज्लिस-ए-शूरा भारत 2017 ई के स्वीकृत प्रस्ताव के अंतर्गत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रसिद्ध रचनाओं में हिंदू धर्म और उनके पेशवाओं की प्रशंसा में प्रस्तुत किए गए आदेशों को एक स्थान पर एकत्रित करके पुस्तिका के रूप में तैयार करवा कर प्रकाशित किया जा रहा है।

"हज़रत रामचंद्र जी महाराज, हज़रत कृष्ण जी महाराज और वेद के सम्बंध में अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के उपदेश" के शीर्षक पर उर्दू में यह पुस्तिका श्रीमान मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर नाज़िर दावत ए इलल्लाह शुमाली हिंद (उत्तर भारत) ने परिश्रम से संकलित की है अल्लाह तआला उनको महान प्रतिफल प्रदान करे आमीन।

मज्लिस ए शूरा के प्रस्ताव के अनुसार इस पुस्तिका के प्रकाशन के पश्चात हिंदुस्तान की स्थानीय भाषाओं में भी इसके अनुवाद प्रकाशित किए जा रहे हैं। अल्लाह तआला प्रत्येक दृष्टि से इस पुस्तिका को लोगों के लिए लाभदायक बनाए। आमीन

नाज़िर नश्र-व-इशाअत क़ादियान

शीर्षक

संख्या	शीर्षक	पृष्ठ
1	प्राक्कथन	1
2	हज़रत रामचंद्र जी महाराज और हज़रत कृष्ण जी महाराज	4
3	श्री कृष्ण जी महाराज का धर्म	10
4	श्री कृष्ण जी की गोपियों की वास्तविकता	13
5	वेद	15
6	श्री कृष्ण का समरूप अर्थात कल्कि अवतार	20

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्राक्कथन

एक बार हज़रत अबू ज़र रज़ि अल्लाहु अन्हु ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अब तक कितने नबी (अवतार) संसार में आ चुके हैं?

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- एक लाख चौबीस हज़ार नबी इस संसार में पैदा हो चुके हैं।

(तफ़सीरुल-क़ुर्आन अलअज़ीम भाग प्रथम पृष्ठ 586 इमामुल जलील इस्माईल बिन कसीर अल कुर्शी अल दमिश्की अल मुतवफ़्फ़ी 774 हिजरी तफ़सीर सूरह अन्निसा)

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया है :

وَ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا رُسُلًا مِّنۡ قَبۡلِکَ مِنۡہُمۡ مَّنۡ قَصَصۡنَا عَلَیۡکَ وَ مِنۡہُمۡ مَّنۡ لَّمۡ نَقۡصُصۡ عَلَیۡکَ ؕ (सूरह अल मु'मिन : 40/79)

अर्थात : और नि:सन्देह हमने तुझसे पहले भी रसूल भेजे थे। उनमें से कुछ ऐसे थे जिनका वर्णन हमने तुझसे कर दिया है और कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका हमने तुझसे वर्णन नहीं किया।

وَ اِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡہَا نَذِیۡرٌ ﴿۲۵﴾ (सूरह फ़ातिर : 35/25)

अर्थात : कोई उम्मत (क़ौम) ऐसी नहीं गुज़री जिसमें ख़ुदा की ओर से कोई सुधारक न आया हो।

وَّ لِکُلِّ قَوۡمٍ ہَادٍ ﴿۸﴾ (अर्रअद : 13/8)

अर्थात : प्रत्येक क़ौम के लिए एक पथ प्रदर्शक होता है।

समस्त नबियों के आने का उद्देश्य अल्लाह तआला ने यह वर्णन किया कि :

وَ لَقَدْ بَعَثْنَا فِیْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا
الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَ مِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ
الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۷﴾

(अन-नहल : 16/37)

अर्थात : और निश्चित रूप से हमने प्रत्येक क़ौम में कोई न कोई रसूल यह आदेश देकर भेजा कि हे लोगो! तुम अल्लाह की उपासना करो और हद से बढ़ने वालों से दूर हो जाओ। (तफ़सीर सग़ीर)

कुछ मुसलमान ऐसे भी हैं जो कृष्ण जी महाराज और रामचंद्र जी महाराज को अल्लाह तआला का नबी मानने के लिए तैयार नहीं है। उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने प्रत्येक क़ौम में अपने नबी और रसूल भेजे हैं। वह स्वयं फ़रमाता है कि संसार में कोई क़ौम ऐसी नहीं गुज़री है जिसमें ख़ुदा के नबी न आए हों। अर्थात प्रत्येक क़ौम में ख़ुदा के नबी, मार्गदर्शक और सुधारक पैदा होते रहे हैं। इस आयत के अनुसार स्वीकार करना पड़ता है और वास्तव मे भी यही है कि अल्लाह तआला ने जैसा कि रब्बुल आलमीन (समस्त संसार का रब) की विशेषताओं के अंतर्गत प्रत्येक देश के निवासियों का उनकी आवश्यकता के अनुसार भौतिक प्रशिक्षण (तर्बियत) किया उसी प्रकार उसने प्रत्येक देश और क़ौम को आध्यात्मिक प्रशिक्षण से भी लाभान्वित किया। ताकि किसी क़ौम को शिकायत लगाने का अवसर न मिले और वह यह न कह सके कि अल्लाह तआला ने अमुक क़ौम पर तो कृपा की परन्तु हम पर नहीं की। हज़रत

कृष्ण जी महाराज और रामचंद्र जी अवतारों के उसी विश्वव्यापी क्रम से सम्बंध रखते हैं जो हिंदुओं की ओर से अवतरित हुए। क्योंकि लाखों हृदय उन महान व्यक्तियों के प्रेम से भरे हुए हैं और वे आपको अवतार मानकर आपकी बातों को बड़े सम्मान और आस्था की दृष्टि से देखते हैं। अत: यह इस्लाम की शिक्षा के विरुद्ध होगा यदि हम दोनों अवतारों को وَ اِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْر के और وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ अनुसार ख़ुदा तआला की ओर से मार्ग दिखाने वाला और डराने वाले नहीं ठहराएंगे और यह विचार करेंगे कि हज़ारों वर्षों से एक क़ौम को ख़ुदा तआला ने मार्गदर्शक (अवतार) के बिना रखा।

वर्तमान युग में अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम (1250 हिजरी 1835 ई०-1908 ई०) को (حَكَم) हकम (निर्णायक) और (عَدَل) अदल (इंसाफ) करने वाला बना कर भेजा। आपने स्पष्ट रूप में फ़रमाया कि हज़रत कृष्ण जी महाराज और हज़रत रामचंद्र जी महाराज अल्लाह तआला के पैग़ंबर (अवतार) थे और जब वेद उतरा था वह ख़ुदा की वाणी थी। इसके पश्चात वह अपनी मूल अवस्था पर स्थापित नहीं रह सका। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत कृष्ण जी और रामचंद्र जी और वेद के बारे में अपनी विभिन्न पुस्तकों और प्रवचनों के संग्रह में जो कुछ फ़रमाया है उनमें से कुछ उद्धरणे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

हज़रत रामचंद्र जी महाराज और हज़रत कृष्ण जी महाराज

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

(1) "यह भी स्मरण रहे कि मेरा यह धर्म नहीं है कि इस्लाम के अतिरिक्त समस्त धर्म झूठे हैं। मैं यह विश्वास रखता हूँ कि वह ख़ुदा जो सृष्टि का ख़ुदा है वह सब पर नज़र रखता है। यह नहीं होता कि वह एक ही क़ौम की परवाह करे और दूसरों पर नज़र न डाले। हाँ यह सच है कि बादशाह के सफर की तरह कभी किसी क़ौम पर वह समय आ जाता है और कभी किसी क़ौम पर। मैं किसी के लिए नहीं कहता। ख़ुदा तआला ने मुझ इस प्रकार ही प्रकट किया है कि राजा रामचंद्र और कृष्ण जी आदि भी ख़ुदा के सच्चे बंदे थे और उससे सच्चा सम्बंध रखते थे। मैं उस व्यक्ति से विमुख हूँ जो उनकी निंदा या अपमान करता है उसकी उदाहरण कुएं के मेंढ़क के भांति है जो समुद्र की विशालता से अवगत नहीं है। जहां तक उन लोगों की सही जीवनियाँ ज्ञात होती हैं, उनमें पाया जाता है कि, उन लोगों ने ख़ुदा तआला के रास्ते में तपस्याएं कीं और प्रयत्न किया कि उस मार्ग को पाएं जो ख़ुदा तआला तक पहुंचने का वास्तविक मार्ग है। अत: जिस व्यक्ति का यह धर्म हो कि वे सच्चे न थे वह क़ुर्आन शरीफ़ के विरुद्ध कहता है क्योंकि इसमें फ़रमाया है :-

وَ اِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡہَا نَذِیۡرٌ ﴿۲۵﴾ (सूरह फ़ातिर : 35/25)

अर्थात : कोई ऐसी क़ौम नहीं जिसमें ख़ुदा तआला का कोई अवतार न आया हो।" (मलफ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 163)

(2) "और हम लोग दूसरी क़ौमों के अवतारों के सम्बंध में कदापि ग़लत शब्दों का प्रयोग नहीं करते। बल्कि हम यही विश्वास रखते हैं कि

संसार में विभिन्न क़ौमों के लिए जितने अवतार आए हैं और करोड़ों लोगों ने उनको मान लिया है और संसार के किसी भाग में उनका प्रेम और प्रतिष्ठा उत्पन्न हो गई है और एक लंबा समय उस प्रेम और विश्वास पर व्यतीत हो गया है तो बस यही एक प्रमाण उनकी सच्चाई के लिए पर्याप्त है। क्योंकि यदि वे ख़ुदा की ओर से न होते तो यह मान्यता करोड़ों लोगों के हृदय तक नहीं फैलती ख़ुदा अपने मान्य पुरुषों का सम्मान दूसरों को कदापि नहीं देता और यदि कोई झूठा उनकी कुर्सी पर बैठना चाहे तो जल्द तबाह होता है और नष्ट किया जाता है।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 452- 453)

(3) "अत: इस कसौटी की दृष्टि से ज़मीन पर जीवित धर्म केवल इस्लाम है यद्यपि हम इसके बावजूद नहीं कह सकते हैं कि हिंदुओं के नबी और अवतार झूठे और कपटी थे (न-ऊज़ुबिल्लाह) और न हम उनको गालियां देते हैं। बल्कि ख़ुदा ने हमें यह शिक्षा दी है कि कोई आबाद गांव और देश नहीं जिसमें उसने कोई अवतार न भेजा हो। जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है:

وَ اِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِیۡهَا نَذِیۡرٌ ﴿۲۵﴾

अर्थात कोई ऐसी क़ौम नहीं जिसमें ख़ुदा तआला का कोई अवतार न आया हो।"

(4) "हिंदुओं में जो एक नबी गुज़रा है जिसका नाम कृष्ण था वह भी इस में सम्मिलित है। खेद कि जैसे दाऊद नबी पर दुष्ट लोगों ने व्यभिचार और दुराचार के आरोप लगाए। ऐसे ही आरोप कृष्ण पर भी लगाए गए हैं और जैसा कि दाऊद ख़ुदा तआला का पहलवान और बड़ा बहादुर था और ख़ुदा उससे प्यार करता था। वैसा ही आर्यवर्त में कृष्ण था अत: यह कहन उचित है कि आर्यवर्त का दाऊद कृष्ण ही था और

इस्राईली नबियों का कृष्ण दाऊद ही था। और यह बिल्कुल सही है कि हम कहें कि दाऊद कृष्ण था या कृष्ण दाऊद था। क्योंकि युग अपने आप को दोहराता है। और पवित्र हो या दुष्ट हो बार-बार संसार में उनके उदाहरण पैदा होते रहते हैं।"

(बराहीन अहमदिया भाग पंचम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 117)

(5) "प्रत्येक क़ौम में डराने वाला (अवतार) आया है जैसे क़ुर्आन से प्रमाणित है इसीलिए रामचंद्र जी और कृष्ण जी आदि अपने युग के नबी होंगे। " (मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 142)

(6) "एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अन्य देशो के अवतारों के सम्बंध में प्रश्न किया गया तो आपने यही फ़रमाया कि प्रत्येक देश में ख़ुदा तआला के अवतार गुज़रे हैं और फ़रमाया कि كان فى الهند نبيا اسود اللون اسمه كاهنا अर्थात हिन्द में एक नबी गुज़रा है जो काले रंग का था और उसका नाम काहिन था। अर्थात कन्हैया जिसको कृष्ण कहते हैं।"

(चश्मा-ए-मा'रिफ़त, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 382)

(7) "एक प्रतिष्ठित अवतार जो इस देश और बंगाल में एक बड़े प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ माने जाते हैं जिनका नाम श्री कृष्ण है। वह अपने मुल्हम (ख़ुदा से वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त) होने का दावा करते हैं और उनके अनुयायी न केवल उनको मुल्हम अपितु परमेश्वर करके मानते हैं। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि श्री कृष्ण अपने समय के नबी और अवतार थे और ख़ुदा उनसे वार्तआलाप करता था।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 445)

(8) "स्पष्ट रहे कि ख़ुदा तआला ने कश्फ़ी अवस्था में कई बार

मुझे इस बात पर सूचन दी है कि आर्य क़ौम में कृष्ण नाम का एक व्यक्ति जो गुज़रा है वह ख़ुदा के प्रतिष्ठित और अपने समय के नबियों में से था और हिंदुओं में अवतार का शब्द वास्तव में नबी के ही अर्थ में हैं।

(हाशिया दर हाशिया तुहफ़ा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 317)

(9) "अब स्पष्ट हो कि राजा कृष्ण, जैसा कि मुझ पर प्रकट किया गया है वास्तव में एक ऐसा पूर्ण व्यक्ति था जिसका उदाहरण हिंदुओं के किसी ऋषि और अवतार में नहीं पाया जाता। और अपने समय का अवतार अर्थात नबी था जिस पर ख़ुदा की ओर से रूहुल क़ुदुस (पवित्र आत्मा) उतरती थी। वह ख़ुदा की ओर से विजय प्राप्त और भाग्यशाली था। आर्यवर्त की धरती को पाप से साफ़ किया। वह अपने युग का नबी था जिसकी शिक्षा को पीछे से बहुत बातों में बिगाड़ दिया गया। वह ख़ुदा के प्रेम से पूर्ण था और नेकी से दोस्ती और बुराई से दुश्मनी रखता था। ख़ुदा का वादा था कि अंतिम युग में उसके समरूप अर्थात अवतार पैदा करे। अत: यह वादा मेरे आने से पूरा हुआ।" (लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 228)

(10) "यह बात स्पष्ट है कि निरंतरता एक ऐसी चीज़ है कि यदि अन्य क़ौमों के इतिहास की दृष्टि से भी पाया जाए तो तब भी हमें स्वीकार करना ही पड़ता है जैसा कि हिंदुओं के प्रतिष्ठित रामचंद्र और कृष्णा जी का अस्तित्व निरंतरता के द्वारा ही हमने स्वीकार किया है। यद्यपि ऐतिहासिक घटनओ की जांच पड़ताल में हिंदू लोग बहुत कच्चे हैं। परन्तु इतनी निरंतरता के बावजूद जो उनके निरंतर लेखों से पाया जाता है कदापि यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि राजा रामचंद्र और राजा कृष्ण यह सब मनगढ़त ही नाम हैं।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 399)

(11) "और यह तो सच है कि राजा रामचंद्र और राजा कृष्ण वास्तव में परमेश्वर नहीं थे। परन्तु इस में क्या संदेह है कि वे दोनों महापुरुष ख़ुदा तक पहुंचे हुए और अवतार थे। ख़ुदा का नूरानी प्रकाश उन पर उतरता था। इसलिए वह अवतार कहलाएं।"

(सनातन धर्म, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 475, हाशिया)

(12) "हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और दूसरे नबी सब के सब पवित्र, प्रतिष्ठित और ख़ुदा के चुने हुए थे। ऐसा ही ख़ुदा ने जिन महान व्यक्तियों के द्वारा आर्यावर्त में पवित्र शिक्षाएं उतारीं और दूसरे बाद में आने वाले जो आर्यों के पवित्र महापुरुष थे जैसा कि राजा रामचंद्र और कृष्ण यह सब के सब पवित्र लोग थे और उनमें से थे जिन पर ख़ुदा की कृपा होती है।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 383)

(13) "हमें खेद है कि आर्य साहिबान भी पर्दा न करने पर बल देते हैं और पवित्र क़ुर्आन के आदेश का विरोध चाहते हैं जब कि इस्लाम का यह बड़ा उपकार हिंदुओं पर है कि उसने उनको सभ्यता सिखलाई और उसका ज्ञान ऐसा है जिस से उपद्रवों का दरवाज़ा बंद हो जाता है कहावत प्रसिद्ध है

خر بستہ بہ گرچہ دزد آشنا است

(अर्थात : गधा यदि चोरी के काम से परिचित है तो उसे बांध कर रखना उचित है।)

यही अवस्था महिलाओं और पुरुषों के सम्बंध की है कि यद्यपि कुछ ही क्यों न हो परन्तु फिर भी कुछ स्वभाविक आवेग और इच्छाएं इस प्रकार की होती हैं कि जब उनको थोड़ी सी प्रेरणा हुई तो तुरंत न्याय

की सीमा से इधर उधर हो गए। इसलिए आवश्यक है कि महिलाओं और पुरुष के सम्बंध में पूर्ण आज़ादी इत्यादि में कदापि हस्तक्षेप न किया जाए। थोड़ा अपने दिलों पर ध्यान दो कि क्या तुम्हारे दिल रामचंद्र और कृष्ण आदि की भांति पवित्र हो गए हैं? फिर जब वह पवित्र दिल तुमको प्राप्त नहीं हुआ तो पर्दा न करने को प्रचलित करके बकरियों को शेरों के आगे क्यों रखते हो।" (मलफ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 105)

श्री कृष्ण जी महाराज का धर्म

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से दिनंक 5 मार्च 1908 ई० को मौलवी अबू रहमत साहिब ने कहा कि हुज़ूर कृष्ण जी महाराज का धर्म जैसा कि स्वयं उनके शब्दों से ज्ञात होता है उनके युग के साधारण हिंदू धर्म के लोगों से अलग था?

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

यह विश्वस्नीय और सही बात है कि महापुरुषों की शिक्षा पर अधिक समय व्यतीत होने पर बाद के लोग उनकी शिक्षाओ को भूल जाते हैं और उनकी सच्ची शिक्षाओं में बहुत कुछ अनुचित परिवर्तन कर लिया करते हैं। और समय के व्यतीत हो जाने से उनकी असली शिक्षा पर सैंकड़ों पर्दे पड़ जाते हैं और वास्तविकता दुनिया की नज़रों से छुप जाती है। मूल बात यही सच है कि उनका धर्म इस समय के हिंदू धर्म के मानने वाले लोगों से बिल्कुल भिन्न और एकेश्वरवाद की सच्ची शिक्षा पर आधारित था।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने इस स्थान पर अपने दो इल्हामों (ख़ुदा की वाणियों) का वर्णन किया। प्रथम यह है कि :

"हे कृष्णा रुद्र गोपाल तेरी महिमा गीता में लिखी गई है"

और दूसरा इल्हाम यह बयान फ़रमाया कि :

एक बार यह इल्हाम हुआ था कि "**आर्यों का बादशाह आया।**"

एक और स्वपन हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया कि :

एक बार हमने कृष्ण जी को देखा कि वह काले रंग के थे और पतली नाक चौड़े माथे वाले हैं। कृष्ण जी ने उठकर अपनी नाक हमारी नाक से और अपना माथा हमारे माथे से मिला कर जोड़ दिया। एक और घटना इसी विषय से संबंधित हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने इस प्रकार वर्णन किया कि अवतारों में से एक कश्फ़ी अवस्था में एक बार अयोध्या में पहुंचे। वहां पहुंचकर मस्जिद में लेट गए। देखते क्या हैं कि कृष्ण जी आए हैं और सात रुपए उनको भेंट के रूप में दिए हैं कि हमारी और से निमंत्रण के रूप में स्वीकार किये जाएं। क्योंकि वह अल्लाह के वली (महात्मा) मुसलमान थे उन्होंने कहा कि तुम लोग काफ़िर हो। हम तुम्हारा माल नहीं खाते। इस पर कृष्ण जी ने फ़रमाया कि क्या आप वर्तमान हिंदुओं से हमारी हालत और ईमान का अनुमान लगाते हैं। हम उनमें से हरगिज़ हरगिज़ नहीं हैं। बल्कि हमारा धर्म एकेश्वरवाद है और हम आप लोगों के बिल्कुल निकट हैं। अन्यथा इसके इब्ने अरबी अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि-

كان فى الهند نبى اسود اللون اسمه كاهن

अर्थात हिंदुस्तान में एक अवतार गुज़रा है जिसका रंग काला था और नाम उसका काहिन था। बाहरवीं सदी के मुजद्दिद सरहिंदी साहब फ़रमाते हैं कि हिंदुस्तान में कुछ क़बरें ऐसी हैं जिनको मैं पहचानता हूँ कि यह नबियों की क़बरें हैं।

इन सब घटनओं के सारांश और प्रमाणों से और अन्यथा पवित्र क़ुर्आन से स्पष्ट रूप में प्रमाणित होता है कि हिंदुस्तान में भी नबी गुज़रे हैं। इसीलिए पवित्र क़ुर्आन में आया है कि-

وَ اِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡہَا نَذِیۡرٌ ﴿۲۵﴾ (सूरह फ़ातिर : 35/25)

और हज़रत कृष्ण भी उन्हीं अवतारों में से एक थे जो ख़ुदा तआला की ओर से आदेशित होकर अल्लाह तआला के समस्त लोगों के पथ प्रदर्शक और एकेश्वरवाद को स्थापित करने के लिए अल्लाह तआला की ओर से आए। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि प्रत्येक क़ौम में अवतार आए हैं। यह बात अलग है कि उनके नाम हमें ज्ञात न हों।

مِنۡہُمۡ مَّنۡ قَصَصۡنَا عَلَیۡکَ وَ مِنۡہُمۡ مَّنۡ لَّمۡ نَقۡصُصۡ عَلَیۡکَ ؕ

(सूरह अलमु'मिन : 40/79)

लंबा समय व्यतीत होने के कारण लोग उन शिक्षाओं को भूलकर कुछ और का और ही उनकी ओर संलग्न करने लग जाते हैं।

(मल्फ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम भाग 5 पृष्ठ 458)

श्री कृष्ण जी की गोपियों की वास्तविकता

मौलवी अबू रहमत साहब ने कहा कि हुज़ूर! कृष्ण के अर्थ उनके शब्दकोश के अनुसार हैं- वह प्रकाश जो धीरे-धीरे संसार को प्रकाशित करता है। अज्ञानता के अंधकार को दूर करने वाले का नाम कृष्ण है।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि- उनके विषय में जो गोपियों की प्रचुरता प्रसिद्ध है वस्तुतः हमारा विचार यह है कि उम्मत (क़ौम) की उपमा स्त्री से भी दी जाती है। अतः पवित्र क़ुर्आन से भी

इसका उदाहरण मिलता है जैसा कि फ़रमाता है-

وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ

(सूरह अत्तहरीम 66/12) यह एक अत्यंत गूढ़ और रहस्स्यपूर्ण रुपक होता है। उम्मत (क़ौम) में प्रतिभा की क्षमता होती है और नबी और उम्मत (क़ौम) के अध्यात्म ज्ञान और दानशीलता के बड़े बड़े स्रोत फूटते हैं और नबी और उम्मत (क़ौम) के सच्चे सम्बंध से वे परिणाम पैदा होते हैं जिनसे ख़ुदा को दानशीलता और दया की ओर आकर्षण होता है। अतः कृष्ण और गोपियों की कहानियों के रहस्य में हमारे विचार में यही भेद छुपा है।

मौलवी अबू रहमत साहिब ने बताया कि गोपियों का अर्थ इस प्रकार भी है कि गो कहते हैं पृथ्वी को और पी पालनहार को। अर्थात कृष्ण जी के सच्चे अनुयाई ऐसे लोग थे जो सदाचारी और लोगों का पालन पोषण करने वाले थे।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इसमें भी कोई दोष नहीं, क्योंकि मनुष्य को पृथ्वी से भी समानता दी गई है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है कि-

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۸﴾

(अल-हदीद : 57/18)

पृथ्वी को जीवित करने से तात्पर्य पृथ्वी पर रहने वाले लोगों से है। फिर मौलवी अबू रहमत साहिब ने बताया कि यह भी सम्भव है कि कृष्ण जी ने अपनी शिक्षा को स्त्रियों के द्वारा ही फैलाया हो। क्योंकि उनके पुरुष तो साधारणतः खेती के कामों में जंगलों, वनों में रहते थे और उनको धर्म के प्रचार के लिए कम समय मिलता था। स्त्रियां ही यह कार्य करती होंगी।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमें एक बार विचार आया कि कृष्ण जी को दाऊद के साथ पूर्ण समानता ज्ञात होती है। क्योंकि राग, रंग, नृत्य, स्त्रियों की भीड़ और बहादुरी में ख़ुदा जाने क्या बात है।

(मल्फ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम भाग 5 पृष्ठ 461)

वेद

(1) "हमारा पूर्ण विश्वास है कि वेद गढ़ा हुआ नहीं है। मनुष्य के गढ़े हुए में यह शक्ति नहीं होती कि करोड़ों लोगों को अपनी ओर खींच ले।" (पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 453)

(2) लेकिन फिर भी संभव और ज्ञानगम्य है कि इस किताब में परिवर्तन किया गया हो और किसी युग में यह सही हो और ख़ुदा की ओर से हो। फिर अज्ञानियों के हस्तक्षेप और परिवर्तन से बिगड़ गई हो और वे श्रुतियां उस में से निकाल दी गई हों जिनमें यह वर्णन था कि तुम सूरज, चाँद, हवा, आग, पानी, आकाश और मिट्टी आदि की पूजा मत करो। यद्यपि रद्दोबदल और परिवर्तन से यह पुस्तक ख़तरनक और हानिकारक हो गई लेकिन किसी समय में व्यर्थ न थी। जो व्यक्ति हिंदुओं के इतिहास से परिचित है वह खूब जानता है कि वेद पर बड़े-बड़े बदलाव आए हैं और एक समय में वेदों को विरोधियों ने आग में जला दिया था और लंबे समय तक वे ऐसे लोगों के पास रहे जो पंचतत्व (धरती, आकाश, हवा, पानी, आग) और मूर्तिपूजा के समर्थक थे।

(नसीम दावत, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 405)

(3) वेद की दृष्टि से तो स्वप्नों और इल्हामों पर मुहर लग गई है। (हक़ीक़तुल-वह्यी पृष्ठ 5, रूहानी ख़ज़ायन भाग 22)

(4) اَلَسۡتُ بِرَبِّكُمۡ قَالُوا بَلٰى पृष्ठ 229 (अनुवाद : क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं हूँ? उन्होंने कहा क्यों नहीं) रुहों की शक्तियां जिनमें ख़ुदा तआला का प्रेम पैदा हुआ है स्वयं अपनी गवाही दे रही हैं जो वे ख़ुदा के हाथ से पैदा हुई हैं।

यदि यह प्रश्न उत्पन्न हो कि हम किस प्रकार पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाए? क्योंकि दोनों शिक्षाओं के मध्य विरोधाभास है इसका उत्तर यह है कि कोई विरोधाभास नहीं। वेद की श्रुतियों की हज़ारों प्रकार की व्याख्याएं की गई हैं और उन सब के अतिरिक्त एक व्याख्या वह भी है जो क़ुर्आन के अनुसार है।

(याद्दाश्तें पृष्ठ 420 रूहानी ख़ज़ायन भाग 21)

(5) इसी आधार पर हम वेद को भी ख़ुदा की ओर से मानते हैं और उसके ऋषियों को महान और पवित्र समझते हैं यद्यपि हम देखते हैं कि वेद की शिक्षा पूर्ण रूप से किसी क़ौम को एकेश्वरवादी नहीं बना सकी और न बना सकती थी। और जो लोग इस देश में मूर्तिपूजक अथवा अग्निपूजक .... पाए जाते हैं। वे समस्त लोग अपने धर्म को वेद ही की ओर संबंधित करते हैं।

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 453-454)

(6) यह अवश्य स्मरण रखो कि वह्यी और इल्हाम के बारे में ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में अत्यधिक स्थानों पर वचन दिए हैं और यह इस्लाम ही से विशिष्ट है। अन्यथा ईसाइयों के निकट भी मोहर लग चुकी है। वे अब कोई व्यक्ति ऐसा नहीं बता सकते जो अल्लाह तआला

के संबोधन और संवाद से सम्मानित हो। और वेदों पर तो पहले ही मोहर लगी हुई है। उनका धर्म ही यही है कि वेदो में इल्हाम के पश्चात फिर सदा के लिए यह सिलसिल: (परम्परा) बंद हो गया। मनो ख़ुदा तआला पहले कभी बोलता था परन्तु अब गूंगा है। मैं कहता हूँ कि यदि वह इस समय संवाद नहीं करता और कोई उसके उपकार से लाभान्वित नहीं तो इसका क्या प्रमाण है कि वह पहले बोलता था और या अब वह सुनता और देखता भी है।

(मलफ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम भाग 4 पृष्ठ 413-414)

(7) हमारी यही विश्वास है कि यद्यपि वर्तमान शिक्षा वेद की एक गुमराह करने वाली शिक्षा है। परन्तु किसी समय में वह उन व्यर्थ की शिक्षाओं से पवित्र होगा। (रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 372)

(8) इसके अतिरिक्त शांतिप्रियों के लिए यह एक प्रसन्नता का स्थान है कि जितनी इस्लाम में शिक्षा पाई जाती है वह शिक्षा वैदिक शिक्षा की किसी न किसी डाल में मौजूद है। उदाहरणत: यद्यपि नवोदित धर्म आर्य समाज का यह सिद्धांत रखता है कि वेदों के पश्चात ख़ुदा के इल्हाम पर मोहर लग गई है परन्तु जो हिन्दू धर्म में समय-समय पर अवतार पैदा होते रहे हैं जिन के मानने वाले करोड़ों लोग इसी देश में पाए जाते हैं उन्होंने उस मोहर को अपने इल्हाम के दावे से तोड़ दिया है। जैसा कि एक प्रतिष्ठित अवतार जो इसी देश और बंगाल में बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ माने जाते हैं, जिनका नाम श्री कृष्ण है, वह अपने ख़ुदा से संवाद प्राप्ति का दावा करते हैं और उनके अनुयायी न केवल उनको ख़ुदा, बल्कि परमेश्वर करके मानते हैं परन्तु इस में संदेह नहीं कि श्री

कृष्ण अपने समय के नबी और अवतार थे और ख़ुदा उन से वार्तालाप करता था।

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 445)

(9) जो वर्तमान में हिंदू साहिबों के हाथ में वेद हैं जिनको वे ऋग्वेद और यजुर्वेद और साम वेद और अथर्व वेद से नामित करते हैं और ऋच और यजुस और सामन और अथर्वन भी बोलते हैं। उनका ठीक-ठीक हाल कुछ ज्ञात नहीं होता कि वे किन महापुरुषों पर अवतरित हुए थे। कोई कहता है कि अग्नि और वायु और सूरज को ये इल्हाम हुआ था जो पूर्णत: निरर्थक बात है। और किसी का यह दावा है कि ब्रह्मा के चार मुख से यह चारों वेद निकले थे। और किसी का यह विचार है कि यह अलग-अलग ऋषियों के अपने ही वचन हैं। अब इन बातों में यहां तक संदेह है कि कुछ पता नहीं मिलता कि इन व्यक्तियों का वस्तुत: कुछ अस्तित्व भी था या केवल काल्पनिक नाम हैं। और वेद पर दृष्टि डालने से तीसरी राय सही ज्ञात होती है क्योंकि अब भी वेद के अलग-अलग मंत्रों पर अलग-अलग ऋषियों के नाम लिखे हुए पाए जाते हैं। और अथर्व वेद के सम्बंध में तो अधिकतर विद्वान पंडितो की इसी पर सहमति है कि वह एक मनगढ़ंत वेद अथवा ब्राह्मण पुस्तक है, जो पीछे से वेदों के साथ मिलाया गया है और यह राय सच्ची भी ज्ञात होती है।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 98-99 हाशिया संख्या 8)

(10) पवित्र क़ुर्आन ने जो कहा है اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ (अल-बक़र: 2/187) इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि दुआ का उत्तर मिलता है। अत: वेद की दुआएं कोई फलदायक नहीं हैं जिनका कोई उत्तर नहीं मिलता बल्कि समस्त दुआएं उलटी ही पड़ती हैं।

(मलफ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम भाग 2 पृष्ठ 294)

(11) ईसाईयों की ही बात नहीं है बल्कि उन से पूर्व कई असहाय व्यक्ति ख़ुदा ठहरा दिए गए। कोई कहता है रामचंद्र ख़ुदा है, कोई कहता है नहीं कृष्ण की ख़ुदाई उससे शक्तिशाली है। इसी प्रकार कोई बुद्ध को, कोई किसी को, कोई किसी को ख़ुदा ठहराता है। इसी प्रकार अंतिम युग के उन भोले भाले लोगों ने भी पहले (अनेकेश्वरवादियों) का अनुसरण करके मरियम के पुत्र को भी ख़ुदा और ख़ुदा का पुत्र ठहरा लिया............. ऐसा ही अधिकतर हिंदू और आर्य भी इन सच्चाइयों से विमुख हैं। क्योंकि उनमें से जो आर्य हैं वे तो ख़ुदा तआला को स्रष्टा ही नहीं समझते और अपनी रूहों का रब्ब उसको नहीं ठहराते। और जो उनमें से मूर्तिपूजक हैं वे पालन पोषण की विशेषता को उस समस्त लोकों के रब्ब से विशिष्ट नहीं समझते और 33 करोड़ देवताओं को पालन-पोषण के कारोबार में ख़ुदा तआला का भागीदार ठहराते हैं और उनसे मन्नतें मांगते हैं। और यह दोनों पक्ष ख़ुदा तआला की दया के भी इंकारी हैं। और अपने वेद की दृष्टि से यह आस्था रखते हैं कि दया की विशेषता कदापि ख़ुदा तआला में नहीं पाई जाती। और जो कुछ संसार के लिए ख़ुदा ने बनाया है यह स्वयं संसार के पवित्र कार्यों के कारण ख़ुदा को बनन पड़ा। अन्यथा परमेश्वर स्वयं अपनी इच्छा से नेकी नहीं कर सकता और न कभी की। इसी प्रकार ख़ुदा तआला को व्यापक दयानिधि भी नहीं समझते क्योंकि उन लोगों की आस्था है कि कोई पापी चाहे कितनी ही सच्चे दिल से क्षमायाचना करे और चाहे वर्षों तक क्षमायाचना करे और रो-रो कर गिड़गिड़ाये और पवित्र कार्यों के

करने में व्यस्त रहे ख़ुदा उसके गुनाहों को जो उससे हो चुके हैं कदापि क्षमा नहीं करेगा जब तक वह कई लाख योनियों को भुगत कर अपन दण्ड न पा लें।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 468-470, ब्राहीन अहमदिया भाग चतुर्थ शेष हाशिया संख्या 11)

श्री कृष्ण का समरूप अर्थात कल्कि अवतार

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

(1) जिस पर ख़ुदा की ओर से रूहुल क़ुदुस (अर्थात जिब्राईल) उतरता था वह ख़ुदा की ओर से विजयी और प्रतापी था। जिसने आर्यवर्त की धरती को पाप से साफ़ किया वह अपने युग का सच्चा नबी था। जिसकी शिक्षा को पीछे से बहुत बातों में बिगाड़ दिया गया वह ख़ुदा के प्रेम से पूर्ण था और नेकी से दोस्ती और बुराई से दुश्मनी रखता था। ख़ुदा का वादा था कि अंतिम युग में उसका प्रतिरूप अर्थात अवतार पैदा करे। अत: यह वादा मेरे आने से पूरा हुआ। मुझे इन सब इल्हामों के अतिरिक्त अपने सम्बंध में एक यह भी इल्हाम हुआ था कि 'हे कृष्ण रुद्र गोपाल तेरी महिमा गीता में लिखी गई है'। इसलिय मैं कृष्ण से प्रेम करता हूँ क्योंकि मैं उसका द्योतक हूँ। और इस स्थान पर एक और रहस्य है कि जो विशेषताएं कृष्ण की ओर मंसूब की गई हैं (अर्थात पापों को नष्ट करने वाला, और ग़रीबों की सांत्वन करने वाला, और उन को पालने वाला।) यही विशेषताएं मसीह मौऊद की हैं। इसलिए आध्यात्मिकता की दृष्टि से

कृष्ण और मसीह मौऊद एक ही हैं।

(लेक्चर सियालकोट पृष्ठ 228-229, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20)

(2) और हिंदुओं की पुस्तकों में एक भविष्यवाणी है और वह यह है कि अंतिम युग में एक अवतार आएगा जो कृष्ण की विशेषताओं पर होगा और उस का प्रतिरूप होगा। और मेरे पर प्रकट किया गया है कि वह मैं हूँ। कृष्ण की दो विशेषताएं हैं, एक रुद्र अर्थात दरिंदों और सूअरों का वध करने वाला अर्थात प्रमाण और निशानों से, दूसरा गोपाल अर्थात गायों को पालने वाला अर्थात अपने हृदय से सदाचारियों की मदद करने वाला, और यह दोनों विशेषताएं मसीह मौऊद की विशेषताएं हैं। और यही दोनों विशेषताएं ख़ुदा तआला ने मुझे प्रदान की हैं।

(हाशिए का हाशिया तोहफ़ा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 317)

(3) मुझे और भी नाम दिए गए हैं और हर एक नबी का मुझे नाम दिया गया है। यद्यपि जो हिन्द में कृष्ण नाम का एक अवतार गुज़रा है जिसको रुद्र गोपाल भी कहते हैं। (अर्थात नश करने वाला और पालन पोषण करने वाला) उसका नाम भी मुझे दिया गया है। अत: जैसा कि आर्य क़ौम के लोग कृष्ण के प्रकटन का इन दिनों में प्रतीक्षा करते हैं वह कृष्ण मैं ही हूँ। और यह दावा केवल मेरी ओर से नहीं है बल्कि ख़ुदा तआला ने बार बार मेरे पर प्रकट किया है कि जो कृष्ण अंतिम युग में प्रकट होने वाला था वह तू ही है। आर्यों का बादशाह और बादशाहत से तात्पर्य केवल आसमानी बादशाहत है। एसे शब्द ख़ुदा तआला की वाणी में आ जाते हैं। परन्तु अर्थ आध्यात्मिक होते हैं।

(ततिम्मा (परिशिष्ट) हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 521)

(4) 20 अक्तूबर 1930 शाम के समय हज़रत अक़दस ने

निम्नलिखित स्वप्न का वर्णन किया कि :

एक बड़ा तख़्त चौकोर आकृति का हिंदुओं के मध्य बिछा हुआ है जिस पर मैं बैठा हुआ हूँ। एक हिंदू किसी की ओर इशारा करके कहता है कि कृष्ण जी कहां हैं? जिससे प्रश्न किया गया वह मेरी ओर इशारा करके कहता है कि यह हैं। फिर समस्त हिंदू रूपया आदि भेंट के रूप में देने लगे। इतनी भीड़ में एक हिंदू बोला -

'हे कृष्ण जी रुद्र गोपाल'

(मलफ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम भाग 3 पृष्ठ 444)

(5) फ़रमाया, ज्ञात होता है कि इस विश्वव्यापी तूफ़ान, महामारी में यह हिंदुओं की क़ौम भी इस्लाम की ओर ध्यान दें। जबकि हमने बाहर घर बनवाने का निर्णय किया था तो एक हिंदू ने हमको आकर कहा था हम तो क़ौम से अलग होकर आप ही के निकट बाहर रहा करेंगे। तथा दो बार हमने स्वप्न में देखा कि बहुत से हिंदू हमारे आगे सजदा करने की तरह झुकते हैं और कहते हैं कि यह अवतार हैं और कृष्ण हैं। और हमारे आगे भेंटें देते हैं। और एक बार भविष्यवाणी हुई है 'कृष्ण रुद्र गोपाल तेरी महिमा हो, तेरी स्तुति गीता में मौजूद है' शब्द रुद्र का अर्थ डराने और गोपाल का अर्थ शुभ सूचन देने वाला के हैं।

(मलफ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम भाग 2 पृष्ठ 201)

★ ★ ★